लोक कथाओं में अक्लमन्द जानवर–1

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title : Lok Kathaon Mein Aklamand Jaanvar (Intelligent Animals in Folktales-1)
Cover Page picture : Hare
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2014
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
लोक कथाओं में अक्लमन्द जानवर–1 7
1 एक कुत्ता और एक गधा 9
2 धब्बे वाला हिरन और चीता 13
3 गधे की ताकतें 22
4 घोंघा और चीता 29
5 कुत्ता और शेर 34
6 बन्दर की वायलिन 37
7 अनन्सी और काई ढका पत्थर 43
8 नर गिलहरी और रैवन 53
10 चीता और मेंढक 61
11 चिपमंक और भालू 66
12 शेर, खरगोश और हयीना 71

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में अक्लमन्द जानवर–1

दुनियॉ मे दो तरह के लोग होते हैं – एक तो अक्लमन्द और दूसरे बेवकूफ। अक्लमन्दी और बेवकूफी केवल इन्सान के हिस्से में ही नहीं आयी है जानवर और चिड़ियें भी इनमें शामिल हैं। इस तरह ये लोग आदमी, औरत या जानवर या चिड़िया कोई भी हो सकते हैं। अक्लमन्द लोग अपनी अक्लमन्दी से खराब से खराब हालतों में भी अपना काम बना लेते हैं और बेवकूफ लोग अच्छे से अच्छे हालात में भी अपने काम बिगाड़ लेते हैं और अपना बहुत कुछ खो देते हैं। एक अक्लनम्द आदमी या जानवर एक ताकतवर आदमी या जानवर से ज्यादा अच्छा होता है।

कुछ देशों मे कुछ जानवर पहले से ही अक्लमन्द या चालाक या बेवकूफ मशहूर हैं। जैसे अफ्रीका के नाइजीरिया देश में कछुआ और मकड़ा बहुत चालाक और अक्लमन्द हैं। कई देशों में खरगोश बहुत अक्लमन्द है। भारत में लोमड़ी चालाक और गीदड़ डरपोक माना जाता है।

इससे पहले हमने एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें लोगों और जानवरों की बेवकूफी की कुछ लोक कथाऐं दी थीं। इस पुस्तक में हम जानवरों की अक्लमन्दी की कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं। ये लोक कथाऐं चालाक जानवरों, जैसे खरगोश, कायोटी, मकड़े की लोक कथाओं से अलग हैं क्योंकि ये जानवर स्वभाव से ही चालाक नहीं हैं और दूसरों के साथ चालाकी खेलना पसन्द नहीं करते। बल्कि ये जानवर ऐसे हैं जो समय आने पर अपनी अक्लमन्दी से अपनी या दूसरे जानवरों की सहायता करते हैं और जान बचाते हैं। इसलिये इन जानवरों की कथाऐं अलग दी गयी हैं।

दूसरे प्रकार के जानवरों में भी जानवरों की अक्लमन्दी की लोक कथाऐं भी दो तरह की पायी जाती हैं। एक तो वे जिनमें जानवरों ने अपनी अक्लमन्दी या बेवकूफी का इस्तेमाल अपने लिये किया है और वे उसकी वजह से या तो किसी परेशानी में से निकल आये हैं या फॅस गये हैं। और दूसरी वे जिनमें उन्होंने अपनी अक्लमन्दी या बेवकूफी का इस्तेमाल दूसरों के लिये इस्तेमाल किया है और उससे दूसरे जानवरों का फायदा या नुकसान कराया है।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं जानवरों की अक्लमन्दी और बेवकूफी की... ये सारी लोक कथाऍ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 एक कुत्ता और एक गधा[1]

एक कुत्ता और एक गधा दोनों अपने मालिक की बड़ी वफादारी से सेवा किया करते थे। एक दिन वह गधा कुत्ते से बोला — "क्या बात है कुत्ते भाई, जो भी बोझा आदमी से नहीं उठता वह उसे मेरे ऊपर रख कर ले जाता है।

मैं उसे ले कर ऊपर नीचे चढ़ता उतरता हूँ, मैं उसे ले कर घाटियों में से गुजरता हूँ, पहाड़ पर चढ़ता हूँ। पीने का पानी भी मैं ही ले जाता हूँ फिर भी मेरा मालिक मुझे पूरा खाना नहीं देता। यही नहीं, वह मेरी हँसी भी उड़ाता है कि जो यह ले जाता है वह यह खा नहीं सकता। क्या किस्मत है इसकी।"

कुत्ते ने गधे की बात ध्यान से सुनी और फिर कुछ सोच कर बोला — "तुमने मुझसे अभी जो कुछ भी कहा यह बड़े दुख की बात है। जैसा कि तुमको मालूम है कि मैं भी दिन भर मालिक के जानवरों की भेड़ियों और शेर चीतों से देखभाल करता हूँ।

रात को भी अपनी नींद छोड़ कर इधर उधर पहरेदारी करता हूँ, मालिक की भी, जानवरों की भी और अनाज की भी। और जब जरूरत पड़ती है तो भौंकता भी हूँ।

---

[1] A Dog and a Donkey – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa

जब मालिक लोग खाना खाते हैं तो मैं इस उम्मीद में दरवाजे के बाहर मक्खियों से लड़ता रहता हूँ कि वे मुझे अपने खाने में से कुछ बचा हुआ खाना दे देंगे, और फिर भी वे कहते हैं कि यह कुत्ता बदबू फैलाता है इसे बाहर रखो।

क्या यही मेरी इतनी सख्त मेहनत का फल है? गधे भाई, मैं बहुत परेशान हूँ। यह सब मुझे यहाँ इसलिये सहना पड़ता है क्योंकि मेरा यहाँ कोई अपना रिश्तेदार नहीं है।"

इतनी बातें करने के बाद वे दोनों वहाँ से चले गये कि कहीं उनका मालिक उन दोनों की बातें न सुन ले। फिर वे कुछ दूर जा कर और बातें करते रहे। इस तरह बात करते करते वे अपने घर से बहुत दूर निकल गये।

शाम ढल गयी, रात हो गयी। अब उनको चिन्ता हुई कि वे रात कहाँ गुजारें। तभी पास में उनको एक झोंपड़ी दिखायी दी। झोंपड़ी खाली थी सो वे दोनों उसी में चले गये।

कुत्ते ने न तो सुबह नाश्ता किया था, न दोपहर का खाना खाया था और न शाम का खाना। वह भूख के मारे एक कोने में सिकुड़ कर लेट गया।

परन्तु गधे को झोंपड़ी के बाहर हरी हरी मुलायम घास मिल गयी थी सो उसने वहाँ वह घास बड़े प्रेम से खायी। पेट भरने के बाद वह जमीन पर दो चार बार लोटा तो उसका मन गाना गाने को करने लगा सो दो चार बार उसने ढेंचू ढेंचू की आवाज लगायी।

उसकी ढेंचू ढेंचू की आवाज से कुत्ते की ऑख खुल गयी तो कुत्ता बोला — "गधे भाई, तुम गाओ नहीं। यह तुम्हारा गाना हम लोगों को मुसीबत में डाल देगा।"

परन्तु गधे का तो पेट भरा था और चॉदनी रात थी इसलिये उसका तो गाना गाने का मन कर रहा था। उसने फिर ढेंचू ढेंचू की आवाज लगानी शुरू की।

कुत्ता भूखा था। उसने फिर कहा — "मैंने कहा न गधे भाई, तुम इस समय गाओ नहीं। तुम्हारे पहली बार के गाने से ही हयीना[2] को पता चल गया होगा कि तुम कहॉ हो और अब यह दूसरी बार का गाना तो यकीनन उसको यहॉ ले आयेगा। अच्छा हो अगर तुम अभी अपना गाना न गाओ।"

लेकिन गधा तो बस अपने में मग्न था। उसको कुत्ते की सलाह अच्छी नहीं लग रही थी सो उसने एक बार फिर अपना गाना गाया।

अभी गधे ने अपना गाना खत्म ही किया था कि पास की झाड़ियों से एक हयीना बाहर निकल आया और गधे को मार डाला। फिर वह झोंपड़ी के अन्दर आया जहॉ कुत्ता अभी भी सिकुड़ा पड़ा था।

हयीना ने पूछा — "तुम कौन हो?"

[2] Hyena is a tiger like animal. See its picture above.

कुत्ता डर गया और हकला कर बोला — "मैं, मैं, मैं तो भगवान का बनाया एक छोटा सा प्राणी हूँ।"

ऐसा कह कर वह उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "आप यहाँ बैठें मैं आपके लिये गधे के सारे हिस्से एक एक कर के यहीं ला कर दे देता हूँ।" हयीना राजी हो गया।

कुत्ते ने बाहर जा कर गधे का कलेजा फाड़ा और उसका दिल निकाल कर खा गया। इसके बाद उसने गधे के शरीर के दूसरे हिस्से हयीना को देने शुरू किये।

हयीना चिल्लाया — "मुझे गधे का दिल चाहिये उसका दिल कहाँ है मुझे उसका दिल ला कर दो।"

इस पर कुत्ता बोला — "ओह मेरे स्वामी, उसके तो दिल ही नहीं है। अगर उसके दिल होता तो आज उसकी यह हालत ही क्यों होती।" और यह कह कर वह बाहर निकल गया।

बेवकूफ का साथ ज़िन्दगी तक ले सकता है जैसा कि गधे के साथ से कुत्ते का होता पर अक्लमन्दी से कठिन से कठिन परेशानी को हल किया जा सकता है जैसा कि कुत्ते ने किया।

2 धब्बे वाला हिरन और चीता[3]

एक बार एक धब्बे वाला हिरन था जिसका नाम था यू यू[4]। वह अक्सर ही एक घने जंगल के बाहर की तरफ के मैदान में चरा करता था।

वहाँ बरगद[5] के पेड़ों की एक कतार लगी हुई थी जो उस घने जंगल की हद जैसी थी। उसने उस हद को भी कभी पार नहीं किया था।

एक बार एक किसान का कुत्ता उस मैदान में घूमता घूमता उधर आ निकला और यू यू का पीछा करने लगा। उस बेचारे हिरन का पहले किसी ने इस तरह से पीछा भी नहीं किया था सो वह डर गया और डर कर जंगल के अन्दर की तरफ भाग गया।

उसने पहले कभी इतना ॲधेरा भी नहीं देखा था सो वह डर के मारे उस ॲधेरे में ही भागता जा रहा था भागता जा रहा था। चारों तरफ पेड़ों से बेलें लटकी हुई थीं वह उन्हीं में से हो कर भागा जा

[3] The Spotted Deer and the Tiger – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in e-Bbook form free of charge.

[4] Yu Yu – name of the spotted deer

[5] Translated for the word "Banyan tree". It can be very big and can have as many trunks that its main trumk cannot be identified. In Calcutta, India, there is the largest Banyan tree of the world under which a large army once took rest at night.

रहा था कि उसका सिर एक पेड़ के तने से टकराया और वह काई[6] से भरी जमीन पर गिर पड़ा।

जव उसकी ऑखें जंगल में ॲधेरे में देखने के लायक हो गयीं तो उसने अपने चरने वाले मैदान में लौटने का रास्ता ढूँढना शुरू किया पर वह मैदान की तरफ जाने की बजाय जंगल में और भी ज़्यादा गहरे जाता गया। वह ॲधेरे में रास्ता भूल गया था।

भागते भागते आखिर वह थक गया और आराम करने के लिये रुक गया। तभी एक साही[7] नीचे उगे हुए पौधों में से आ निकला और उसके खुरों को सूँघने लगा।

फिर उसने अपनी लम्बी नाक ऊपर उठायी और सूँघ कर उस अजनबी जानवर को पहचानने की कोशिश करने लगा। जब वह उसको न पहचान सका तो उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?"

यू यू बड़ी नम्रता से बोला — "मैं यू यू धब्बे वाला हिरन हूँ।" उसने अपने शब्द खत्म किये ही थे कि एक लम्बी दुम वाली चिड़िया[8] ऊपर से उड़ कर नीचे आ गयी।

[6] Translated for the word "Moss"

[7] Translated for the word "Porcupine". See its picture above.

[8] Translated for the word "Pheasant". See its picture above.

जब वह चिड़िया नीचे उड़ कर आयी तो उसके पंख हिरन के सींगों से छू गये।

वह चिड़िया बोली — "ओह तो तुम धब्बे वाले हिरन हो। मैंने उनके बारे में कुछ कुछ सुना है। पर क्या सारे धब्बे वाले हिरन तुम्हारे जैसे अजीब दिखायी देते हैं?"

"हाँ मैं धब्बे वाला हिरन हूँ और सारे धब्बे वाले हिरन मेरे जैसे ही दिखायी देते हैं। तुमने इससे पहले कभी कोई धब्बे वाला हिरन नहीं देखा क्या?"

एक घोंघा जो यू यू के सिर के ऊपर पाइन पेड़ के पत्ते पर आराम कर रहा था बोला — "शायद नहीं, हम लोगों ने ऐसा कोई हिरन पहले कभी नहीं देखा। पहले कोई ऐसा हिरन इस जंगल की तरफ कभी आया ही नहीं।"

यू यू ने सब जानवरों की तरफ देखा और बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। मुझे तुम लोगों से जंगल की ज़िन्दगी के बारे में कुछ सीखना है।"

जंगल के जानवर इस अजीब जानवर यू यू की सहायता करने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गये। उन्होंने उसको स्वाददार खाना बताया, आराम करने की जगहें बतायीं और फिर उसको अपने आप ही जंगल की ज़िन्दगी देखने के लिये छोड़ दिया।

कुछ देर बाद यू यू एक बड़े से साफ मैदान में घुसा। जैसे ही उसने इधर उधर देखने के लिये अपना सिर उठाया तो उसको चीते की हरी हरी ऑखें दिखायी दीं।

यू यू तो डर के मारे कॉप गया। यू यू को पता था कि यह चीता तो उसको अपने एक ही पंजे के वार से मार देगा। पर यह क्या? चीते ने तो अपना शरीर एक इंच भी नहीं हिलाया।

चीते ने भी धब्बे वाला हिरन पहले कभी नहीं देखा था सो वह उसकी अजीब सी शक्ल देख कर बोला — "तुम कौन हो और तुम इतने बदसूरत क्यों हो?"

यू यू की तो घबराहट की वजह से जान ही निकली जा रही थी पर फिर भी उसने हिम्मत बटोरी और धीरज रख कर विश्वास के साथ बोला — "मैं यू यू हूॅ, धब्बे वाला हिरन।"

चीता गुर्राया — "ओह तो तुम धब्बे वाले हिरन हो। वह तो ठीक है, पर तुम यह तो बताओ कि तुम्हारे सिर पर ये कौन से पौधे उगे हुए हैं।"

जब यू यू इस सवाल का जवाब सोच ही रहा था कि चीते ने उसकी तरफ देख कर अपना चेहरा सिकोड़ा और उसकी तरफ झपटा। उसको देख कर यू यू डर गया पर तभी उसके दिमाग में एक विचार आया।

वह चीते से बोला — “लगता है कि तुम कोई बहुत अक्लमन्द जानवर नहीं हो। तुम्हारा यही मतलब है न कि तुम यह ही नहीं जानते कि ये सादा सी चीज़ें क्या हैं। लगता है कि तुमको तो दुनियॉ की मामूली सी जानकारी भी नहीं है इसलिये अब तुम्हें मुझे ही बताना पड़ेगा कि ये क्या चीज़ हैं। ये चीता चौप स्टिक्स[9] हैं।”

धब्बे वाला हिरन आगे बोला — “वैसे तो सारी चौप स्टिक्स सीधी होती हैं पर क्योंकि चीते का मॉस बहुत चिकना होता है इसलिये उसको मुझे घुमावदार चौप स्टिक्स से खाना पड़ता है ताकि खाते समय मेरा खाना वापस कटोरे में न गिर जाये।”

यह सुन कर चीता तो सकते में आ गया। अपने इतने सालों के शिकार करने और इधर उधर घूमने में उसने यह कभी नहीं देखा और सुना था कि किसी ने कभी चीते का मॉस खाने की हिम्मत की हो। उसको तो यह सुन कर ही बहुत अजीब लगा।

वह यू यू की ताकत का अन्दाजा लगाने के लिये उसके करीब खिसक आया और बोला — “तुम किसी चीते को मारने के लिये बहुत छोटे हो, ओ धब्बे वाले हिरन।”

यू यू की ऑखें आश्चर्य से घूम गयीं।

---

[9] Chop Sticks – chop sticks are two small thin wooden sticks the Chinese use to eat their food. See their picture above.

वह बोला — "क्या? मैं चीते को मारने के लिये बहुत छोटा हूॅ? ज़रा तुम मेरी पीठ पर पड़े इन धब्बों को तो देखो। मुझे विश्वास है कि तुमको तो यह पता ही नहीं है कि ये धब्बे होते किसलिये हैं। मेरे ये धब्बे उन चीतों की गिनती बताते हैं जिनको मैंने मारा है और खाया है।

तीन साल पहले मैं यह पूछने के लिये जेड बादशाह[10] के पास गया था कि मैं किस तरह से अमर बन सकता हूॅ तो उन्होंने मुझे बताया कि धरती पर मेरे आने का एक ही उद्देश्य था।

उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे धरती पर के हर उस चीते को खाना है जो किसी ज़िन्दा मॉस को खाता है और हर चीते को खाने के लिये मुझे एक धब्बा मिल जायेगा। जब मैं एक हजार चीते खा लूॅगा तब मैं अमर हो जाऊॅगा। अब देखो, क्या तुम मेरे शरीर के इन धब्बों को गिन सकते हो?"

जब यू यू यह सब कह रहा था तब वह खुद डर के मारे कॉप रहा था। और जब तक यू यू ने अपनी बात खत्म की तब तक तो वह बुरी तरह कॉपने लगा।

चीते को एक बार फिर से शक हुआ कि यह हिरन कुछ अजीब सी बात कर रहा है तो उसने हिरन से फिर पूछा — "जब तुमने

[10] Jade Emperor – the Emperor of Sky

इतने सारे चीते मारे और खाये हैं तो फिर तुम इतने कॉप क्यों रहे हो?”

यू यू ने कॉपती हुई आवाज में जवाब दिया — “मैं कॉप नहीं रहा हूँ। असल में चीते को खाने से पहले मुझे उसको खाने के लिये ताकत बनानी पड़ती है तो मैं वह ताकत बना रहा हूँ और उसी ताकत की वजह से मैं हिल भी रहा हूँ न कि डर से।”

चीता अब इससे ज़्यादा नहीं सुन सकता था। वह तुरन्त ही पलटा और बिना पीछे देखे घने जंगल की तरफ भाग गया।

वह तब तक भागता रहा जब तक कि उसको इस बात का यकीन नहीं हो गया कि हिरन अब उसका पीछा नहीं करेगा। थक कर वह एक पाइन के पेड़ की शाख के नीचे गिर पड़ा।

पाइन के पेड़ की एक शाख पर से एक आवाज बोली — “हलो चीते राजा। लगता है तुम किसी से भागने की कोशिश कर रहे हो। किससे डर रहे हो तुम?”

आवाज सुन कर चीते ने ऊपर देखा तो देखा कि वहॉ एक बन्दर एक शाख से उलटा लटका हुआ मुस्कुरा रहा था। वह चीते की कहानी सुनना चाहता था इसलिये उसने अपनी पूँछ खोली और जंगल की जमीन पर कूद पड़ा। वह चीते के पैरों के पास आ कर बैठ गया।

चीते ने हकलाते हुए और कॉपते हुए अपनी वह अजीब सी कहानी बन्दर को सुना दी। बन्दर को इस कहानी पर विश्वास ही नहीं हुआ।

पूरी कहानी सुनने के बाद उसने चीते से कहा कि वह खुद भी उस धब्बे वाले हिरन को देखना चाहता था इसलिये वह उसको उस हिरन के पास ले चले।

चीता बोला — "नहीं नहीं, मैं वहॉ नहीं जाऊॅगा। अगर उस हिरन ने मेरे ऊपर हमला कर दिया तो मेरे पास तो बचने का कोई रास्ता भी नहीं है। तुम कम से कम पेड़ पर तो चढ़ सकते हो।"

पर बन्दर को तो ना नहीं सुनना था। उसने चीते से इतनी प्रार्थना की कि चीते को उसको उस हिरन के पास ले कर जाना ही पड़ा। पर वह उसको एक शर्त पर ले जाने के लिये तैयार हुआ।

बन्दर अपने आप को चीते की कमर से बॉध लेगा ताकि जब बन्दर उस हिरन से बच कर शाख पर चढ़े तो वह चीते को भी अपने साथ ले ले। सो बन्दर ने अपने आपको मोटी मोटी बेलों से चीते की पीठ से बॉध लिया और वे दोनों उस हिरन के पास चल दिये।

यू यू ने जंगल में किसी के आने की आवाज सुनी तो उसने उस तरफ देखा तो ॲधेरे में उसको चीते के शरीर की धारियॉ दिखायी दीं जो धूप की एक धारी की रोशनी में चमक रही थीं।

यू यू तो आश्चर्य से कूद पड़ा और चीता डर के मारे जम सा गया। चीते को लगा कि वह हिरन उसको मारने के लिये अपनी सारी ताकत इकट्ठी कर रहा था।

सो एक बार फिर वह अन्धाधुन्ध जंगल के कॉटों में गड्ढों में झाड़ियों में होता हुआ भाग गया और इस पूरे समय बन्दर उसकी पीठ से बॅधा रहा।

इतनी तेज़ी से अन्धाधुन्ध भागने की वजह से बन्दर तो बेहोश हो गया और चीता भी गिर पड़ा। जब चीता कुछ होश में आया तो बन्दर से बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह धब्बे वाला हिरन कितना भयानक है पर तुम मेरी बात ही नहीं मान रहे थे।"

उस दिन से बन्दर अपना समय केवल पेड़ों की ऊपर वाली शाखों पर ही बिताता है और चीता अपने घने जंगल से बाहर नहीं जाता।

3 गधे की ताकतें[11]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार चीन में एक सिल्क का सौदागर अपने गधे को चीन चू शहर[12] ले कर गया। यह चीन चू शहर एक घाटी की बड़ी नीची ढलान पर एक अकेली जगह पर बसा हुआ था।

जब वह वहाँ पहुँचा तो शाम हो गयी थी। शाम को वहाँ के कुछ लोग शाम की सैर करने के लिये निकले हुए थे और कुछ लोग छोटे छोटे होटलों में खाना खा रहे थे।

वह सौदागर शहर की मुख्य सड़क से हो कर जा रहा था कि वह यह देख कर आश्चर्यचकित हो गया कि काफी लोग उसको देख कर अपनी अपनी मेजों से उठ कर खड़े हो गये। ऐसा असल में इस लिये हुआ क्योंकि उन्होंने आज से पहले कभी गधा नहीं देखा था।

कुछ बच्चे तो उस अजीब जानवर को देख कर बहुत ही खुश थे और कुछ उसके खुरदरे भूरे बालों को देख कर और उसके रेंकने की तेज़ आवाज को सुन कर ही डर गये थे।

---

[11] Donkey's Powers – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011.

[12] Chien Chou town

शहर के लोग उसको देख कर जितने ज्यादा उत्सुक थे वह गधा उतनी ही ज्यादा जोर से रेंक रहा था और अपने दाँत दिखा रहा था।

यह देख कर कि लोग उसको इतनी ज्यादा उत्सुकता से देख रहे थे वह गधा भी एक नये विश्वास के साथ सड़क पर चला जा रहा था और उसका मालिक सौदागर भी बहुत खुश खुश उसके पीछे पीछे चल रहा था।

उस रात गधा रात भर इधर उधर करवटें बदलता रहा पर वह रात भर सो नहीं सका। सो उसने यह तय किया कि वह रात को इधर उधर घूमेगा। बस वह वहाँ से उठा और भाग लिया। वह भागता रहा भागता रहा पर वह यह नहीं देख पाया कि वह कहाँ जा रहा था।

जब वह थक कर रुका तो उसने देखा कि वह तो एक जंगल में आ गया था। यह देख कर उसने जब तक सुबह होती है वहीं आराम करने का निश्चय किया। सुबह को जब उसकी नाक और कान पर ठंडी ओस की बूँद पड़ी तब कहीं जा कर उसकी आँख खुली।

जब उसने देखा कि उसके सब बाल ओस की बूँदों से नम हो गये हैं तो उसकी सारी पीठ में ठंड की एक लहर सी दौड़ गयी और

वह कॉप गया। हिम्मत कर के वह उठा, उसने अपने शरीर को हिला कर झटका दे कर उन ओस की बूॅदों को झटक दिया।

उसने सोचा कि जाने से पहले वह थोड़ी सी घास खा ले सो वह अपना सिर नीचा कर के घास खाने लगा। जब वह घास खा रहा था तो उसने अपने पीछे कुछ फुसफुसाहट सुनी।

लेकिन जल्दी ही वह फुसफुसाहट ज़ोर की आवाज में बदल गयी। यह आवाज इतने ज़ोर की थी कि वह गधा अपने नाश्ते पर ध्यान ही नहीं दे सका।

जब उसने इधर उधर देखा तो उसने देखा कि कई देखने वाले उसके अजीब और बड़े साइज़ को देख रहे हैं। उसने सोचा कि अगर लोग मुझे इतने आश्चर्य से देख रहे हैं तो मुझे लगता है कि इन जानवरों को अपनी ऑखों पर विश्वास नहीं हैं।

फिर उसने अपने मन में सोचा कि मैं उनको कुछ ऐसी चीज़ दिखाऊॅ जिससे कि वे कुछ सोच सकें।

गधे ने अपना सिर उठाया, बहुत जोर से ढेंचू ढेंचू किया और अपने पिछले पैर हवा में उछाले। यह देख कर चिड़ियों और जानवरों ने बहुत जोर से चीख मारी और अपने अपने घोंसलों और घरों में घुस गये।

केवल एक तोता ही ऐसा था जो उससे नहीं डरा। उसने खुशी से अपने पंख फड़फड़ाये और जो कुछ उसने देखा था वह बताने के लिये चीते की तरफ उड़ गया।

इस बीच गधा अपनी ताकत दिखाने के इस शो पर बहुत खुश था। वह फिर अपनी घास खाने लगा।

तोते से इस अजीब जानवर की कहानी सुन कर चीता अपने इस ताकतवर दुश्मन जानवर को देखने के लिये बहुत उत्सुक हुआ और वह झाड़ियों में से होता हुआ इस जानवर को देखने के लिये तुरन्त ही दौड़ पड़ा।

जब साफ मैदान आया तो वह वहीं रुक गया और फिर कुछ सोच विचार कर आगे बढ़ा जहॉ वह गधा अभी भी घास खा रहा था।

जब चीते ने गधे का साइज़ देखा तो वह बड़ा नाउम्मीद हुआ पर फिर भी उसने यह निश्चय किया कि वह उसकी ताकत का यह देखने के लिये इम्तिहान जरूर लेगा कि उसको इस जानवर की ताकत से कहीं कोई खतरा तो नहीं है।

गधे ने भी तिरछी निगाह से चीते को देख लिया। हालॉकि उसने भी चीते को पहले कभी नहीं देखा था पर फिर भी उसको ऐसा कुछ नहीं लगा कि उसको चीते से डरना चाहिये।

इसलिये उसने उसको भी अपनी ताकत का एक नमूना दिखाने का फैसला किया सो वह जितनी जोर से अपने दॉत पीस सकता था उतनी जोर से उसने अपने दॉत पीसे। इससे बहुत ज़ोर की आवाज हुई।

चीता उसके दाँत पीसने की आवाज सुन कर डर गया और पास की झाड़ियों में सिकुड़ कर दुबक गया। उसको लगा कि अगर गधे के दाँतों की आवाज ही इतनी ज़्यादा है तो वह तो उसको खा भी सकता है।

गधा अपने नये दुश्मन जानवर के साथ इतना अधिक आनन्द महसूस कर रहा था कि उसने फिर एक बार अपने दाँतों के बीच में से बहुत ज़ोर की हिस की आवाज निकाली।

पर इत्तफाक से चीता उसी समय एक कीचड़ वाले गड्ढे में फिसल गया और वह उसकी हिस की आवाज नहीं सुन सका। बदकिस्मती से जंगल के दूसरे जानवरों ने चीते का वह गिरना देख लिया। धीरे धीरे वह जंगल का राजा किसी तरह से उस गड्ढे में गीला और कीचड़ में सना हुआ निकला।

गधे ने चीते को अपनी ओर आते हुए और फिर अपने से कुछ दूर ही सिकुड़ कर बैठते हुए देख लिया था। अब तक गधे को लग रहा था कि वह चीते से भी लड़ सकता है, जंगल के सारे जानवरों से भी अकेला ही निपट सकता है और उनको हरा सकता है।

वह बिना कुछ सोचे समझे बदकिस्मत चीते की तरफ बढ़ा, अपने पीछे वाले पैर उठाये और उसके कन्धे पर मारे। उसके पैरों की मार से चीता एक काँटों वाली झाड़ी में जा गिरा।

वह उस झाड़ी में से अपने घावों को चाटता हुआ अपनी बाँयी टाँग से लँगड़ाता हुआ बाहर निकला और उसको लगा कि अब वह

अपनी पुरानी ताकत फिर कभी वापस नहीं पा सकता। चीता इन सब हालात पर विचार करते हुए धीरे धीरे गधे से दूर उस मैदान के दूसरे किनारे की तरफ चल दिया।

पर फिर उसको ध्यान आया कि गधे के खुर के नाखून बहुत तेज़ नहीं हैं और उसके दुश्मन ने केवल अपनी रक्षा के हथियार ही उसको दिखाये हैं – अपने खुर और दाँत, या न कि हमला करने वाले हथियार।

यह सोच कर वह फिर से गधे के पास गया और खेल खेल में उसने उसकी पूँछ और पिछली टाँगें अपने पंजों से पकड़ लीं। यह देख कर गधे ने बहुत जोर से ढेंचू ढेंचू किया और अपनी टाँगों से चीते को एक बार फिर मारा।

चीते ने सोचा – "इसका मतलब मैं ठीक था। यह बस अपनी टाँगें ही हवा में फेंक सकता है या फिर ज़ोर की आवाज ही निकाल सकता है और कुछ नहीं कर सकता।"

यह सोच कर चीता गधे पर कूदा और उसने अपने दाँत गधे की गर्दन में घुसा दिये। गधे को न तो बचने का ही मौका मिला और न ही उसके पास अपनी सुरक्षा का कोई तरीका था।

जंगल के सारे जानवर चीते की तरफ तारीफ की नजर से देख रहे थे और चीता अपना स्वादिष्ट खाना खा रहा था। गधे के मरने की खबर चारों तरफ बहुत जल्दी ही फैल गयी।

तब से गधे खुले मैदानों में और पहाड़ियों के आस पास ही रहते हैं और घने जंगलों में नहीं जाते।

4 घोंघा और चीता[13]

एक बार जानवरों के किसी देश में एक चीता रहता था। उसके पाँच बच्चे थे। इस चीते को कोई भी पसन्द नहीं करता था क्योंकि यह बड़ा चालाक और खतरनाक चीता था।

एक दिन चीते ने कछुए नाई को बुलवाया और कहा — "कछुए भाई, मेरे पाँचों बच्चों के बाल काट दो।" सुन कर कछुआ अन्दर ही अन्दर कसमसाया तो पर बोल कुछ नहीं सका।

इस पर चीता गरज कर बोला — "ए कछुए, यह मैंने तुम्हें कितनी इज़्ज़त दी है कि तुमको मैंने अपने बच्चों के बाल काटने के लिये बुलाया और तुम्हारे दिमाग ही नहीं मिल रहे हैं।

पर उससे पहले तुम्हें मेरे बाल काटने होंगे। और याद रखना मैं इसके लिये तुम्हें कुछ दूँगा भी नहीं क्योंकि तुम हमारे बाल काट रहे हो यही इज़्ज़त तुम्हारे लिये क्या कम है। और देखो बाल ठीक से काटना वरना तुम्हारी खैर नहीं।"

कछुआ बड़ी नम्रता से बोला — "सरकार, मैं बिना कुछ लिये ही आपके बाल काटने के लिये तैयार हूँ क्योंकि यह तो वाकई मेरे

[13] Snail and Leopard – a folktale of Yoruba people of Nigeria

लिये बड़ी इज्जत की बात है कि मैं आप और आपके परिवार के बाल काट रहा हूँ पर सरकार मेरी एक प्रार्थना है।"

चीते ने पूछा — "वह क्या?"

कछुआ बोला — "मैं आपके बाल आपको उस पेड़ की ऊपर वाली टहनी पर बिठा कर काटना चाहता हूँ। सभी जानवर जब आपको इस तरह उस ऊपर वाली टहनी पर बाल कटाते देखेंगे तो वे आपसे बहुत प्रभावित होंगे।"

चीता बोला — "वाह, यह तो बहुत ही सुन्दर विचार है।" यह कह कर वह पेड़ की ऊपर वाली टहनी पर पॉव फैला कर आराम से लेट गया। पीछे पीछे कछुए ने भी कदम बढ़ाये।

चीते ने एक जॅभाई ली, अपनी पूँछ फटकारी और अपनी ऑखें बन्द करते हुए बोला — "कछुए भाई ज़्यादा देर नहीं लगाना।"

कछुआ दिखावे के लिये तो चीते के बाल काटता रहा पर सचमुच में उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया बल्कि उसने धीरे धीरे चीते के काफी बाल उस टहनी से बॉध दिये जिस टहनी पर वह बैठा था ताकि वह उस टहनी से अच्छी तरह बॅध जाये।

फिर उसने अपना चाकू जान बूझ कर नीचे गिरा दिया और उसको उठाने का बहाना बना कर और माफी मॉग कर नीचे उतर आया।

उसने चीते के पाँचों बच्चों को उनके पिता के सुन्दर बालों को देखने के लिये बुलाया पर जब वे बच्चे अपनी गुफा से बाहर आये तो उसने उनकी खूब पिटाई की।

अपने बच्चों को पिटता देख कर चीता बड़ी ज़ोर से गरजा और उठ कर कछुए को खाने की सोची, परन्तु तुरन्त ही उसकी यह गरज दर्द भरी चीखों में बदल गयी क्योंकि जैसे ही उसने उठने की कोशिश की तो उसके बाल टहनी से बँधे होने की वजह से वह उठ ही नहीं सका।

उसके बाल खिंच रहे थे और वह नीचे ही नहीं उतर पा रहा था। चीते के बच्चे किसी तरह जान छुड़ा कर जंगल में भाग गये।

उधर चीते की गरज सुन कर जंगल के सारे जानवर चीते पर हँसने लगे। चीते ने उनसे अपने आपको छुड़ाने की बहुत प्रार्थना की परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी और उसकी किसी भी प्रकार की सहायता करने से इनकार कर दिया।

इस हालत में चीता उस टहनी से पूरे दो दिन बँधा रहा और सारे जानवर उसे चिढ़ाते रहे। अब तो उसे भूख भी लग आयी थी।

दूसरे दिन शाम को चीते ने देखा कि एक घोंघा पेड़ की शाखों पर रेंगता हुआ चढ़ा चला आ रहा है। उसने उससे भी सहायता की भीख माँगी और उसकी इस सहायता के बदले में उसकी मनचाही चीज़ देने का वायदा किया।

घोंघा इस शर्त पर चीते को छुड़ाने को राजी हो गया कि छूट जाने के बाद चीता उसे खायेगा नहीं। चीता इस बात पर भी राजी हो गया कि वह आजाद होने के बाद घोंघे को खायेगा नहीं।

घोंघे ने धीरे धीरे चीते के सारे बाल खोल दिये और चीते को पेड़ से आजाद कर दिया।

जब चीता आजाद हो गया तो बहुत जोर से गरजा और पेड़ से नीचे कूद गया और घोंघे से बोला — "दोस्त, अब मैं हर एक को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि वे ज़िन्दगी भर नहीं भूलेंगे। वे फिर कभी भी चीते परिवार का अपमान करने की हिम्मत भी नहीं करेंगे।

मैंने किस तरह इन दो दिनों तक अपने इच्छाओं को कुचला है यह तुम नहीं जानते। अब सबसे पहले तो तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

घोंघा घबरा कर बोला — "पर चीते भाई, तुमने तो मुझे न मारने का वायदा किया था।"

चीता बोला — "चीता कभी सौदेबाजी नहीं करता। तुमने यह सबक देर से सीखा। तब मैं पेड़ के ऊपर बँधा हुआ था पर अब मैं आजाद हूँ और अब सबसे पहले मैं तुम्हें ही मारूँगा।"

अब घोंघे के पास कोई चारा नहीं था। उसने यह सुन कर सूरज देवता को पुकारा — "ओ ओलोजा[14], मुझे बचाओ, मैं मरा।"

[14] Oloja – the name of Nigerians' Sun god

ओलोजा ने उसकी पुकार सुन ली। तुरन्त ही ओलोजा ने ग्रहण[15] भेज कर सूरज में ग्रहण लगवा दिया।

इससे सारी धरती पर ॲधेरा हो गया। चीते को ॲधेरे में घोंघा दिखायी ही नहीं दिया सो ॲधेरे में घोंघा चुपचाप खिसक गया।

उस दिन से चीता अपने बाल नहीं कटवाता, किसी से वायदे नहीं करता और हमेशा ही अपने अपमान का बदला लेने के लिये कछुए की खोज में जंगल में घूमता रहता है।

[15] Translated for the word "Solar Eclipse".

5 कुत्ता और शेर[16]

एक दिन एक कुत्ता खाने की खोज में जंगल तक पहुँच गया। पर सामने बड़ा सा जंगल देख कर वह घबरा गया क्योंकि इससे पहले वह कभी जंगल की तरफ आया नहीं था। उसने कभी जंगल देखा ही नहीं था। पर क्योंकि वह भूखा था इसलिये जल्दी जल्दी खाना खोजने लगा।

कुछ ही देर में उसको एक शेर की दहाड़ सुनायी दी तो वह डर गया। कुत्ते की साँस रुक गयी उसने सोचा आज तो मैं गया। अभी वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि इतने में उसको सामने पड़ीं कुछ सूखी हड्डियाँ दिखायी दीं।

उनको देख कर उसके दिमाग में कुछ आया और उसने उनमें से एक हड्डी उठायी और शेर की तरफ पीठ कर के बैठ कर उसे चबाने लगा।

जब शेर काफी पास आ गया तो वह ज़ोर ज़ोर से बोला — “वाह शेर को खाने का तो मजा ही कुछ और है। एक शेर और मिल जाये तो बस मेरी तो पूरी दावत ही हो जाये।”

[16] Dog and Lion – a folktale from Nigeria, West Africa

यह सुन कर शेर तो सकते में आ गया। उसने सोचा अरे यह कुत्ता तो शेर का शिकार करता है जान बचा कर भाग लो वरना यह तो मुझे भी खा जायेगा और शेर वहाँ से चम्पत हो गया।

पेड़ पर बैठा एक बन्दर यह सब तमाशा देख रहा था। उसने सोचा यह मौका तो अच्छा है मैं शेर को जा कर बन्दर की सारी कहानी बता देता हूँ। इससे शेर से मेरी दोस्ती हो जायेगी और फिर मेरा सारी ज़िन्दगी का खतरा दूर हो जायेगा।

वह फटाफट शेर के पीछे भागा। कुत्ते ने बन्दर को शेर के पीछे भागते हुए देखा तो तुरन्त समझ गया कि कोई गड़बड़ है। उधर बन्दर ने जा कर शेर को सब बता दिया कि उस कुत्ते ने उसे कैसे बेवकूफ़ बनाया।

यह सुन कर शेर जोर से दहाड़ा और बोला – "चल मेरे साथ अभी उसकी लीला खत्म करता हूँ।" यह कह कर उसने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाया और कुत्ते की तरफ लपका।

बच्चो, ज़रा सोचो तो कुत्ते ने क्या किया होगा?

कुत्ते ने शेर को आते देखा तो एक बार फिर उसकी तरफ पीठ कर के बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा – "उफ़, इस बन्दर को भेजे हुए मुझे एक घन्टा हो गया अभी तक उससे एक शेर नहीं फॉसा जा सका। ऐसा कैसे चलेगा।"

यह सुनते ही शेर ने बन्दर को अपनी पीठ पर से उतार कर नीचे फेंका और वह तो यह जा और वह जा। इस तरह कुत्ते ने दो बार शेर से अपनी जान बचायी।

6 बन्दर की वायलिन[17]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। देखो कि इसमें एक बन्दर अपनी वायलिन की सहायता से अपनी जान कैसे बचाता है।

एक बार जानवरों के देश में अकाल पड़ा तो एक बन्दर को भूख की वजह से अपना देश छोड़ने और किसी दूसरी जगह जाने के लिये मजबूर होना पड़ा जहाँ वह कोई काम ढूँढ सके।

उसके अपने देश में तो बल्ब, बीन्स[18], बिच्छू, कीड़े ऐसी सभी खाने की चीज़ें करीब करीब खत्म हो चुकी थीं। पर उसकी अपनी अच्छी किस्मत से उसको अपने एक चाचा ओरंग ऊटंग[19] के घर में रहने की जगह मिल गयी थी जो उसी देश के दूसरे हिस्से में रहता था।

वहाँ कुछ दिन काम करने के बाद जब वह अपने घर लौटना चाहता था तो चलते समय उसके चाचा ने उसको एक वायलिन[20] और एक तीर कमान दिया।

[17] Monkey's Fiddle – a folktale from South Africa. Taken from website: http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft05.htm
[18] Bulb – a kind of root from which another plant can be grown, e.g. onion bulbs, garlic bulbs, tulip bulbs etc. There are many plants which are grown from bulb. And Beans – they can be green beans as well as dry beans also.
[19] Orang Outang – name of the uncle of the monkey
[20] Translated for the word "Fiddle" – it is like a violin string instrument. See its picture above.

उसने बन्दर को उन दोनों चीज़ों के बारे में बताया कि वायलिन बजा कर वह किसी भी चीज़ को नाचने पर मजबूर कर सकता था और तीर कमान से अपने किसी भी शिकार को निश्चित रूप से मार सकता था।

घर लौटने पर उसको सबसे पहले ब्रैर भेड़िया[21] मिला। भेड़िये ने उसको उसके घर की सारी खबर दी और साथ में यह भी कहा कि वह सुबह से एक हिरन को मारने की कोशिश कर रहा था पर वह उसको मार ही नहीं पा रहा था।

इस पर बन्दर ने उसको अपने तीर कमान का जादू बताया और कहा कि अगर वह हिरन उसको दिखायी नहीं भी दिया तो भी उसका तीर कमान उसको उसके सामने ले आयेगा और मार देगा।

सो भेड़िये ने बन्दर को वह हिरन दिखाया। बन्दर तो तैयार था जैसे ही उसने हिरन देखा उसने उसको अपना निशाना बनाया और तीर चला दिया। हिरन तुरन्त ही मर गया। दोनों ने पेट भर कर उसे खाया।

पर बजाय इसके कि वह भेड़िया बन्दर को उस हिरन को मारने और उसको खाना खिलाने के लिये धन्यवाद दे वह बन्दर से जलने लगा। उसने बन्दर से वह तीर कमान उसको दे देने की प्रार्थना की।

जब बन्दर ने अपना तीर कमान उसको देने से मना किया तो भेड़िये ने उसे अपनी ताकत से धमकाया।

---

[21] Brer wolf – Brer in South African language means “Brother”.

उसी समय वहाँ से एक गीदड़ गुजर रहा था। गीदड़ को देख कर भेड़िया उससे बोला कि बन्दर ने उसका तीर कमान चुरा लिया है और अब देने से मना कर रहा था।

जब गीदड़ ने दोनों तरफ की बातें सुनी तो वह बोला कि इस मामले का फैसला वह अकेला नहीं कर सकता। उसने सलाह दी कि इस मामले को तो शेर चीते और दूसरे जानवरों की कचहरी में ले जाया जाना चाहिये।

उसने साथ में यह भी कहा कि जब तक उन लोगों का जिस चीज़ पर उनका झगड़ा हो रहा था उसका फैसला हो वह उस चीज़ को अपने पास रखेगा ताकि वह सुरक्षित रहे।

पर इससे पहले कि बन्दर और भेड़िया कचहरी जाने के लिये आपस में राजी हों वह गीदड़ तुरन्त ही उस तीर कमान की सहायता से खाने का बहुत सारा सामान ले आया।

इस काम में क्योंकि उसको बहुत देर लग गयी इसलिये तब तक बन्दर और भेड़िया कचहरी नहीं जा सके।

और कोई रास्ता न देख कर दोनों कचहरी जाने के लिये तैयार हुए। बन्दर के सबूत बहुत कमजोर थे और उससे भी बुरी बात यह थी कि गीदड़ उसके खिलाफ बोल रहा था।

उधर गीदड़ बन्दर के खिलाफ इसलिये बोल रहा था कि अगर वह बन्दर के खिलाफ बोलेगा तो शायद वह भेड़िये से भी तीर

कमान लेने में कामयाब हो जायेगा क्योंकि वह तीर कमान तो उसको भी अच्छा लगा था।

कचहरी में जाने पर बन्दर को सजा हो गयी। चोरी जानवरों की दुनियाँ में एक बहुत बड़ा जुर्म था और उसकी सजा फाँसी थी। बन्दर बेचारा क्या करता। बन्दर का तीर कमान तो गीदड़ के पास था पर उसकी वायलिन अभी भी उसीके पास थी।

जैसा कि रिवाज है कि मरने वाले से उसकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है बन्दर को मारने से पहले उसकी भी आखिरी इच्छा पूछी गयी तो उसने फाँसी पर चढ़ने से पहले कचहरी से एक बार अपनी वायलिन बजाने की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना मान ली गयी।

हालाँकि बन्दर तो पहले से ही बहुत अच्छी वायलिन बजाता था और अब तो उसके पास यह जादू की वायलिन थी तो इसकी तो दूसरी वायलिनों से ताकत ही अलग थी।

जैसे ही उसने "मुर्गे की बाँग"[22] का पहला सुर छेड़ा तो शेर की सारी कचहरी जैसे ज़िन्दा हो उठी। और फिर कुछ ही पलों में तो वहाँ बैठा हर जानवर नाचने लगा।

वह बार बार और जल्दी जल्दी उस धुन को बजाने लगा। जितनी जल्दी वह धुन वह बजा रहा था सारे जानवर उतनी ही तेज़ी से नाचते जा रहे थे।

---

[22] Cockcrow tune – maybe it was some good popular musical tune of South Africa

कुछ ही देर में वे सब जानवर नाचते नाचते इतने थक गये कि उनमें से बहुत सारे जानवर तो थक कर नीचे ही गिर पड़े। पर उनके पैर उनके जमीन पर गिरने के बाद भी हिल रहे थे।

पर बन्दर ने उसके चारों तरफ क्या हो रहा था किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं दिया। वह तो बस अपनी ऑखों को आधा बन्द किये और अपने सिर को वायलिन से टिकाये हुए मगन हो कर अपनी वायलिन बजाता रहा।

सबसे पहले हॉफता हुआ भेड़िया सहायता की आवाज में चिल्लाया — "ओ बन्दर भाई, बन्द करो अपनी यह वायलिन। हमारे प्यार की खातिर इसे बन्द करो।"

पर बन्दर ने उसको भी नहीं सुना और वह अपनी वायलिन पर वह मुर्गे की बॉग वाली धुन बजाता ही रहा, बजाता ही रहा।

कुछ देर बाद शेर थक गया और जब वह अपनी पत्नी के साथ नाच का एक चक्कर और काट कर बन्दर के पास आया तो चिल्लाया — "मेरा पूरा राज्य तुम्हारा है अगर तुम अपनी वायलिन बजाना बन्द कर दो तो।"

बन्दर बोला — "मुझे तुम्हारा राज्य नहीं चाहिये। तुम बस मेरी सजा वापस ले लो और मेरा तीर कमान वापस कर दो। और हॉ ओ भेड़िये, तुम यह मान लो कि तुमने उसे मुझसे चुराया है। बस मैं तुरन्त ही अपनी वायलिन बन्द कर दूॅगा।"

भेड़िया चिल्लाया — "हाँ मैं मानता हूँ, हाँ मैं मानता हूँ कि मैंने ही उसे तुमसे चुराया है।"

शेर भी चिल्लाया — "हाँ मैं तुम्हारी सजा वापस लेता हूँ।"

बन्दर ने एक दो बार वह धुन और बजायी और अपना तीर कमान ले कर एक कैमलथौर्न[23] के पेड़ के ऊपर जा कर बैठ गया।

वहाँ कचहरी में दूसरे सारे जानवर सब इतने डर गये कि वे सब वहाँ से भाग गये कहीं ऐसा न हो कि बन्दर अपनी वायलिन फिर से बजाना शुरू कर दे।

इस तरह बन्दर ने अपनी वायलिन बजा कर अपनी जान बचायी।

[23] Camelthorn tree is one of the most found trees of South African trees even in desert. See its picture above.

7 अनन्सी और काई ढका पत्थर[24]

एक बार की बात है कि अनन्सी मकड़ा एक जंगल में से हो कर बस चलता जा रहा था, चलता जा रहा था, चलता जा रहा था कि उसकी नजर किसी चीज़ पर पड़ी।

यह चीज़ एक बड़ा अजीब सा पत्थर था जो काई से ढका हुआ था। अनन्सी बोला — "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

कि तभी फट। सब कुछ ॲधेरा हो गया। अनन्सी नीचे गिर गया और गिरते ही बेहोश हो गया।

करीब एक घंटे बाद अनन्सी की ऑख खुली तो उसका सिर घूम रहा था। वह अभी भी यही सोच रहा था कि उसको हुआ क्या था। वह क्यों गिर पड़ा था।

सो उसने शुरू से सोचा कि वह रास्ते पर चलता जा रहा था तब उसने कुछ देखा। वह रुका और उसने कहा — "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

कि तभी फिर से फट। फिर सब कुछ ॲधेरा हो गया और अनन्सी फिर से नीचे गिर गया और गिरते ही फिर से बेहोश हो गया।

[24] Anansi and the Moss-Covered Rock. A folktale from Western Africa.
Adapted from the book : "Anansi and the Moss-Covered Rock". By Eric A Kimmel.

करीब एक घंटे बाद जब अनन्सी की ऑख खुली तो उसका सिर तभी भी घूम रहा था। पर अब उसकी समझ में आ गया था कि उसके साथ क्या हुआ था।

"हॅू, तो यह जादुई पत्थर है। जब भी कोई इसके पास आता है और ये जादुई शब्द कहता है – "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।" तो वह गिर कर बेहोश हो जाता है।

यह जानना तो बड़े काम की बात है। और अब मैं जान गया कि इसको कैसे इस्तेमाल करना है।"

यह सोचते हुए और अपने दिमाग की तेज़ी पर मुस्कुराते हुए अनन्सी जंगल में से हो कर फिर चला, फिर चला, फिर चला और एक शेर के घर आ पहॅुचा।

शेर अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठा हुआ था। उसके पैरों के पास बहुत सारे याम[25] बिखरे पड़े थे। अनन्सी को याम बहुत अच्छे लगते थे पर अपने आलसीपन की वजह से न तो वह उनको उगाता था और न ही उनको खोदता था।

सो अनन्सी ने शेर से कहा — "हलो शेर जी। आप कैसे हैं? आज का दिन बहुत गर्म है। है न?"

[25] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 10 pounds. It is the staple diet in Western African countries. See its picture above.

शेर बोला — “हॉ अनन्सी। आज तो वाकई बहुत ही गर्म दिन है।”

अनन्सी बोला — “मैं तो जंगल के पेड़ों की छॉह में घूमने के लिये जा रहा हूॅ। क्या आप भी मेरे साथ चलना पसन्द करेंगे?”

शेर बोला — “हॉ हॉ जरूर। गर्मी में वहॉ घूमना अच्छा रहेगा।”

सो शेर और अनन्सी दोनों जंगल में चलते गये, चलते गये और चलते गये। अनन्सी शेर को उस जंगल में एक खास जगह ले आया और शेर से पूछा — “शेर जी क्या आपको भी वह दिखायी दे रहा है जो मैं देख रहा हूॅ?”

शेर बोला — “हॉ अनन्सी। अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।”

बस शेर का इतना कहना था कि शेर तो धम्म से नीचे गिर पड़ा और गिरते ही बेहोश हो गया।

अनन्सी को मौका मिल गया वह तुरन्त शेर के घर दौड़ा गया और उसके सारे याम वहॉ से उठा कर अपने घर ले गया।

एक घंटे के बाद जब शेर होश में आया तब भी उसका सिर चकरा रहा था और अनन्सी वहॉ से गायब था। वह तो वहॉ कहीं भी दिखायी नहीं दे रहा था।

सो वह बेचारा वहाँ से खुद ही अपने घर चला गया। घर पहुँच कर उसने देखा कि उसके तो सारे याम वहाँ से जा चुके थे। यह देख कर शेर बहुत दुखी हुआ।

पर अनन्सी बहुत खुश था। वह अपनी इस चाल को फिर से खेलने के लिये बिल्कुल इन्तजार नहीं कर पा रहा था। सो वह जंगल में से हो कर फिर चला और चलता गया, चलता गया और चलता गया।

इस बार वह एक हाथी के घर आया। हाथी भी अपने घर के बाहर के चबूतरे पर बैठा था। उसके पैरों के पास बहुत सारे केले पड़े हुए थे।

अनन्सी को केले भी बहुत अच्छे लगते थे पर वह अपने आलसीपन की वजह से न तो उनको वह खुद उगा पाता था और न ही तोड़ पाता था। सो उसने हाथी के केले लेने की सोची।

वह हाथी के पास गया — "गुड डे हाथी जी। आज का दिन कितना गर्म है। है न?"

हाथी बोला — "हाँ अनन्सी बिल्कुल है। आज का दिन तो वाकई बहुत ही गर्म है।"

अनन्सी बोला — "मैं तो जंगल के पेड़ों की छाँह में घूमने के लिये जा रहा हूँ। क्या आप भी मेरे साथ चलना पसन्द करेंगे?"

हाथी बोला — "हाँ हाँ जरूर। मुझे अपने साथ ले चलने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

सो हाथी और अनन्सी दोनों जंगल में चलते गये, चलते गये और चलते गये। अनन्सी हाथी को वहाँ एक खास जगह ले आया और हाथी से पूछा — "हाथी जी, क्या आपको भी वह दिखायी दे रहा है जो मैं देख रहा हूँ?"

हाथी बोला — "हाँ अनन्सी। अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

बस हाथी का इतना कहना था कि वह तो धम्म से नीचे गिर पड़ा और गिरते ही बेहोश हो गया।

अनन्सी तुरन्त हाथी के घर दौड़ा गया और उसके सारे केले वहाँ से उठा कर अपने घर ले गया।

एक घंटे के बाद हाथी को होश आया तो उसका सिर चकरा रहा था और अनन्सी वहाँ से गायब था। वह कहीं दिखायी नहीं दे रहा था।

सो वह अकेला ही अपने घर चला गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसके सारे केले वहाँ से जा चुके थे। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ।

पर अनन्सी बहुत खुश था। वह अपनी इस चाल को फिर से खेलने के लिये बिल्कुल इन्तजार नहीं कर पा रहा था।

इस बार उसने अपनी यह चाल पहले हिप्पो पर चलायी, फिर राइनो पर चलायी, फिर जिराफ पर चलायी, और फिर ज़ीब्रा पर

चलायी। और इन्हीं पर नहीं बल्कि जितने जानवरों पर वह चला सकता था उतने जानवरों पर चलायी।

पर एक छोटी जंगली हिरनी यह सब एक झाड़ी के पीछे से खड़ी खड़ी देख रही थी। यह हिरनी इतनी छोटी और शर्मीली थी कि इसको देख पाना भी मुश्किल था।

उसने अनन्सी की सब नीच चालें बार बार देखीं और फिर सब दूसरे जानवरों को बुलाया। उसको लगा कि अब समय आ गया है जब अनन्सी को उसके कामों का सबक मिलना ही चाहिये।

वह छोटी जंगली हिरनी जंगल में काफी दूर तक चली गयी जहाँ नारियल[26] के पेड़ उग रहे थे। वह उनमें से एक नारियल के पेड़ पर चढ़ गयी और वहाँ से उसने बहुत सारे नारियल तोड़ तोड़ कर नीचे फेंक दिये।

उन नारियलों को एक टोकरी में भर कर वह अपने घर ले गयी और अपने घर के आगे के चबूतरे पर फैला दिया। फिर वह वहीं उनके पास बैठ गयी और अनन्सी के आने का इन्तजार करने लगी।

कुछ देर बाद ही अनन्सी उधर आ निकला। जब उसने छोटी जंगली हिरनी के उन बहुत सारे नारियलों को देखा तो उसकी आँखों में चमक आ गयी।

[26] Translated for the word “Coconut”. See a picture of a coconut tree above.

उसको नारियल के अन्दर का सफेद मुलायम गूदा खाना बहुत अच्छा लगता था पर आलसी होने की वजह से वह न तो नारियल उगाता था और न ही तोड़ता था।

इतने सारे नारियल सामने पड़े देख कर वह उस छोटी जंगली हिरनी से बोला — "हलो छोटी जंगली हिरनी। आज का दिन बहुत गर्म है। है न?"

छोटी जंगली हिरनी मुस्कुरायी और बोली — "हॉ अनन्सी भाई, है तो। आज का दिन वाकई बहुत गर्म है।"

अनन्सी बोला — मैं जंगल में ठंडी हवा खाने जा रहा हूं क्या तुम भी मेरे साथ आना पसन्द करोगी?"

"यकीनन अनन्सी भाई। मैं भी चलती हूं। इस गर्मी में जंगल में घूमने में तो बहुत ही अच्छा लगेगा। चलो।"

सो अनन्सी और वह छोटी जंगली हिरनी दोनों जंगल में घूमने चल दिये। जंगल की ठंडक में वे चलते गये, चलते गये और चलते गये जब तक अनन्सी उस छोटी जंगली हिरनी को एक खास जगह नहीं ले आया।

एक जगह आ कर वह छोटी जंगली हिरनी से बोला — "ओ छोटी जंगली हिरनी, उधर देखो। क्या तुम वह देख रही हो जो मैं देख रहा हूं?"

वह छोटी जंगली हिरनी अनन्सी की चाल के बारे में सब कुछ जानती थी सो उसने उधर की तरफ देखने का बहाना किया जिधर अनन्सी ने उसको इशारा किया था और बोली — "नहीं अनन्सी भाई, मुझे तो कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

अनन्सी बोला — "तुमको वह दिखायी देना ही चाहिये ओ छोटी जंगली हिरनी। ज़रा ठीक से देखो न।"

छोटी जंगली हिरनी ने फिर देखने की कोशिश की और बोली — "नहीं अनन्सी मुझे तो अभी भी कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

अनन्सी को अब थोड़ा गुस्सा आ गया क्योंकि वह काई लगा पत्थर तो सामने ही पड़ा था और वह छोटी जंगली हिरनी कहे जा रही थी कि उसको कुछ दिखायी नहीं दे रहा।

पर अपने गुस्से को काबू में रखते हुए अनन्सी फिर बोला — "ओ छोटी जंगली हिरनी, तुमको वह दिखायी देना ही चाहिये। तुम उधर देखो न जिधर मैं तुमको इशारा कर रहा हूँ। क्या अब तुम्हें कुछ दिखायी दे रहा है?"

बेचारी छोटी जंगली हिरनी ने फिर देखने की कोशिश की और बोली — "नहीं अनन्सी भाई, मुझे तो अभी भी कुछ दिखायी नहीं दे रहा।"

अनन्सी ने अपने पैर पटके और बोला — "तुम झूठ बोल रही हो। तुमको दिखायी पड़ रहा है पर तुम बस कहना नहीं चाह रही हो।"

छोटी जंगली हिरनी ने भोलेपन से पूछा — "अनन्सी भाई मैं क्या नहीं कहना चाह रही?"

"तुम जानती हो।"

"तो क्या वह मुझे कहना ही चाहिये?"

अनन्सी गुस्से में बोला — "हॉ।"

"ठीक है तो मैं तुमको खुश करने के लिये कहूँगी। "तुमको तो मालूम ही है कि मुझे क्या कहना चाहिये... ।" अब मैंने कह दिया क्या तुम इससे सन्तुष्ट हो?"

अनन्सी चिल्लाया "नहीं।" तुमको यह नहीं कहना है कि "तुमको तो मालूम ही है कि मुझे क्या कहना चाहिये... ।"

तो उसने पूछा — "तब फिर मैं क्या कहूॅ?"

अनन्सी को तो यह मालूम था कि उसको वह खुद नहीं कहना है पर अपने जोश में यह भूल गया था सो बोल पड़ा "तुम कहो कि "अरे यह कितना अजीब सा काई से ढका पत्थर है।"

बस जैसे ही अनन्सी ने यह कहा अनन्सी धम्म से नीचे गिर गया और गिर कर बेहोश हो गया। छोटी जंगली हिरनी दौड़ी दौड़ी उन सब जानवरों के पास गयी जिन जिनको अनन्सी ने धोखा दिया था।

सब एक साथ अनन्सी के घर गये और अपनी अपनी चीज़ें उसके घर से उठा लाये जो उसने उनके घरों से चोरी की थीं।

जब एक घंटे बाद अनन्सी होश में आया तो उसका सिर भी चकरा रहा था। छोटी जंगली हिरनी वहाँ से गायब थी। वह उसको वहाँ कहीं दिखायी नहीं दे रही थी।

जब अनन्सी अपने घर पहुँचा तो उसका घर वैसा ही खाली पड़ा था जैसा कि उस काई से ढके पत्थर के मिलने से पहले पड़ा था। अपना घर इस हालत में देख कर अनन्सी बहुत दुखी हुआ पर वह क्या कर सकता था।

पर अगर तुम सोचते हो कि इस घटना से अनन्सी को कोई सीख मिल गयी होगी तो तुम गलती पर हो। वह तो अभी भी वैसा ही है और आगे भी वैसा ही रहेगा।

वह आज तक दूसरों के साथ चाल खेलने से बाज़ नहीं आता।

8 नर गिलहरी और रैवन[27]

एक बार रैवन समुद्र के किनारे उड़ रहा था। कुछ समुद्री चिड़ियॉ नीचे चट्टानों पर बैठी थीं। उन्होंने उसको देख कर उसे बुरे बुरे नामों से पुकारना शुरू कर दिया — “ओ तुम गन्दी चीज़ें खाने वाले, ओ तुम सड़ा हुआ मॉस खाने वाले, ओ तुम काले।”

रैवन पलटा और यह चिल्लाते हुए उड़ गया — “ओ चिड़ियों, तुम लोग मुझे इतने बुरे नामों से क्यों पुकारती हो?”

वह उस पानी के ऊपर से बहुत दूर उड़ गया और पानी के उस पार एक पहाड़ पर आ बैठा।

सामने ही उसको एक नर गिलहरी का बिल दिखायी दिया। उसको देख कर उसने सोचा — “अगर मुर्दा मॉस खाना खराब बात है तो मैं अब से ज़िन्दा मॉस खाऊँगा। अब आज से मैं एक हत्यारा बनूँगा।”

वह उसके बिल के आगे खड़ा हो गया और उसमें रहने वाले के आने का इन्तजार करने लगा। जल्दी ही नर गिलहरी खाना ले कर घर वापस आ गया।

---

[27] The Marmot and the Raven - a folktale from Native Americans, USA. Adapted from the Book : “A Treasury of Eskimo Tales / by Clara Kern Bayliss. 1922. Its 31 stories are on http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Eskimo_folktale_28.html

नर गिलहरी ने रैवन से कहा — “तुम तो बिल्कुल ही मेरे घर के दरवाजे के सामने खड़े हो। थोड़ा हट कर खड़े हो जाओ ताकि मैं अपने घर के अन्दर जा सकूँ।”

रैवन बोला — “मैं यहाँ हट कर खड़े होने के लिये नहीं आया हूँ। लोग कहते हैं कि मैं मुर्दा माँस खाता हूँ। आज मैं उनको यह दिखाना चाहता हूँ कि मैं मुर्दा माँस नहीं खाता इसलिये आज मैं तुमको मार कर ही खाऊँगा।”

नर गिलहरी बोला — “ठीक है। पर अगर तुम मुझे खाना ही चाहते हो तो मेरे ऊपर एक ऐहसान कर दो। मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छा नाचते हो तो मेरे मरने से पहले तुम मुझे अपना नाच दिखा दो।

अगर तुम उतना ही अच्छा नाचते हो जितना कि लोग कहते हैं तो तुम्हारा नाच देखने के बाद तो मैं तो खुशी से ही मर जाऊँगा। अगर तुम नाचोगे तो मैं गाऊँगा और फिर तुम मुझे खा लेना।”

यह सुन कर तो रैवन खुशी से फूल गया और उसने नाचना शुरू कर दिया और नर गिलहरी ने भी यह दिखाया कि वह उसके नाच का बहुत आनन्द ले रहा था।

नर गिलहरी ने गाया — “ओह रैवन, तुम कितना अच्छा नाचते हो, ओह रैवन तुम कितना अच्छा नाचते हो।”

कुछ देर नाचने गाने के बाद दोनों सुस्ताने के लिये रुक गये। नर गिलहरी बोला — “मैं तुम्हारा नाच देख कर बहुत खुश हुआ

रैवन भाई। तुम अपनी ऑखें बन्द कर लो और बस एक बार और नाच दो और मैं गाता हूॅ।"

रैवन ने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और कूदना शुरू कर दिया और नर गिलहरी ने गाना शुरू कर दिया — "ओह रैवन, तुम कितनी सुन्दरता से नाचते हो। ओह रैवन, तुम कितने बड़े बेवकूफ हो।" और वह रैवन की टॉगों के बीच से निकल कर सुरक्षित अपने बिल में घुस गया।

फिर वहॉ से उसने अपनी नाक बाहर निकाली और हॅसा — "चिकि चिकि चिकि चिकि। जितने लोगों से मैं अब तक मिला हूॅ तुम उनमें सबसे बड़े बेवकूफ हो।

जब तुम नाच रहे थे तो कैसी कैसी हॅसी वाली शक्लें बना रहे थे। मैं तो बड़ी मुश्किल से गा सका, बस हॅसता ही रहा। देखो, मेरी तरफ देखो, मैं कितना मोटा हूॅ। क्या तुम मुझे खाना नहीं चाहोगे?"

और वह रैवन को तब तक तंग करता रहा जब तक कि वह तंग हो कर वहॉ से उड़ नहीं गया।

इस तरह उस नर गिलहरी ने रैवन से अपनी जान बचायी।

9 चीते की गुरु[28]

चीता उस जंगल का एक बहुत ही मजबूत जानवर था। वह बहुत तेज़ भागता था, वह बहुत ज़ोर से बोलता था पर बस शानदार तरीके से चल नहीं पाता था। अपनी ताकत और तेज़ भागने के बाद भी वह छोटे छोटे शिकार भी नहीं पकड़ पाता था।

हर रोज चीता शिकार के लिये अपने घर से निकलता पर अक्सर बहुत सारी रातों को वह बिना शिकार लिये ही घर वापस आ जाता और इस तरह वह बेचारा भूखा ही सो जाता।

एक दिन एक सुबह वह शिकार पर गया तो उसने एक बिल्ली को एक चूहे का पीछा करते और उसको पकड़ते देखा।

बिल्ली बहुत तेज़ थी और शानदार थी। वह बहुत ही शान से और शान्ति से चल रही थी और उसने अपना शिकार बहुत ही आसानी से पकड़ लिया था।

चीते ने सोचा — "काश वह भी इतनी ही शानदार तरीके से चल पाता और अपना शिकार पकड़ पाता।" सो उसने यह सब बिल्ली से सीखने का इरादा किया।

---

[28] The Tiger's Teacher – a folktale from China, Asia. Adapted from the Website : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=224
Retold and written by Mike Lockett
[My Note: This story can be traced back to the stories – "Cat Teaches All Tricks Except One" and "Why Tiger Lacks Some Qualities of Cats"

वह उस बिल्ली के पास गया और बोला — "बिल्ली बहिन, क्या तुम मुझे इसी तरह से शानदार तरीके से चलना सिखाओगी जैसे तुम चलती हो? और क्या तुम मुझे इसी तरह से शिकार करना भी सिखाओगी जैसे तुम करती हो?"

बिल्ली बोली — "पर मुझे यह कैसे यकीन हो कि जो तरीके मैं तुम्हें सिखाऊँगी वह तुम अपने खाने के लिये मेरा ही शिकार करने के लिये इस्तेमाल नहीं करोगे?"

चीता बोला — "क्या तुम सोचती हो कि मैं अपने ही परिवार[29] के लोगों को नुकसान पहुँचाऊँगा? मैं उसको कैसे नुकसान पहुँचा सकता हूँ जो मेरा रिश्तेदार हो।

अगर तुम मेरी सहायता करोगी तो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं खुद तो क्या मैं तो किसी और को भी तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दूँगा।"

चीते ने उससे प्रार्थना की — "तुम मेरी गुरू बन जाओ। और फिर अगर मैं तुम्हारे सिर के एक बाल को भी कोई नुकसान पहुँचाऊँ तो मैं जंगल के सारे जानवरों की बद्दुआ लूँ।"

उसने बिल्ली के सामने यह दिखाने की अपनी पूरी पूरी कोशिश की कि वह उससे सच बोल रहा था। आखिर बिल्ली ने उसकी बातों का विश्वास कर लिया और उसकी सहायता करने पर राजी हो गयी।

[29] Cheeta, tiger, lion and cat are all counted in the family of cat.

बिल्ली ने उसको शरीर को तोड़ने मरोड़ने[30] का अभ्यास कराया, उसको बिना आवाज किये चुपचाप चलना सिखाया। बिल्ली एक बहुत ही अच्छी गुरू थी। उसने चीते को शिकार करने की बहुत सारी चालें सिखायीं।

उसने चीते को जो कुछ भी वह जानती थी वह सभी कुछ सिखाने की पूरी पूरी कोशिश की, सिवाय एक होशियारी के – और वह थी पेड़ पर चढ़ने की कला।

उधर चीता भी एक अच्छा विद्यार्थी था। उसने भी जो कुछ बिल्ली ने उसको सिखाया सब कुछ बहुत अच्छे तरीके से सीखा। बहुत जल्दी ही वह सब कुछ सीख गया और ताकतवर भी हो गया, तेज़ भी हो गया और अपनी चाल में भी बहुत शान्त हो गया।

अब वह एक बड़े शिकारी की तरह शिकार करने के लिये तैयार था। वह खाने के लिये तैयार था। उसने बिल्ली की तरफ देखा तो बिल्ली तो उसको देखने में ही बहुत स्वादिष्ट लगी।

बिल्ली ने भी चीते की तरफ देखा तो चीता मुस्कुराया और उसने उसको अपने दाँत दिखाये। बिल्ली को देख कर चीते के मुँह में पानी आ रहा था और वह उसके मुँह के एक तरफ से बाहर भी बह रहा था।

बिल्ली जान गयी कि चीते के ऊपर अब विश्वास नहीं किया जा सकता था।

---

[30] Translated for the word “Gymnastics”

वह बोली — “अब तुम्हारे सब सबक खत्म हो गये हैं। मैंने तुमको जो कुछ भी मैं सिखा सकती थी सब कुछ सिखा दिया है।”

चीता बोला — “क्या तुमको पूरा यकीन है कि तुमने मुझे वह सब कुछ सिखा दिया जो कुछ तुम जानती थी, ओ मेरी गुरू? क्या अब तुम्हारे पास मुझे सिखाने के लिये कुछ भी नहीं बचा?”

जैसे जैसे चीता यह सब उस बिल्ली से कह रहा था उसके पंजे आगे बढ़ रहे थे। तुरन्त ही चीते ने अपना मुँह खोला और हवा में कूद गया। ओह, चीता तो बहुत तेज़ था।

बिल्ली को भागने का समय ही नहीं मिला। पर वह भागने की बजाय पास वाले पेड़ पर चढ़ गयी। वह उस पेड़ पर जितनी ऊँची चढ़ सकती थी चढ़ती चली गयी।

बिल्ली ने सोचा — “यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कि मैंने चीते को पेड़ पर चढ़ना नहीं सिखाया वरना मैं तो आज गयी थी।”

चीता बहुत कूदा, बहुत गुर्राया, उसने पेड़ पर चढ़ने के लिये पेड़ की छाल पर अपने पंजे भी मारे, उसने बिल्ली की सिखायी हर चाल आजमायी – पर वह पेड़ पर न चढ़ सका।

बिल्ली भी एक शाख से दूसरी शाख पर और फिर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर भागती चली गयी जब तक कि उसने चीते को बहुत पीछे नहीं छोड़ दिया।

चीता बहुत शर्मिन्दा हुआ। जो कुछ उसका गुरू उसको सबसे अच्छा सिखा सकता था उसको सीखने के रास्ते में उसकी भूख और

लालच आ गया था इसी लिये वह उससे सब कुछ नहीं सीख सका और अपना पहला शिकार भी खो बैठा।

इस कहानी से हमको दो सीख मिलती हैं। पहली यह कि विद्यार्थी को अपने सीखने के रास्ते में किसी भी चीज़ को नहीं लाना चाहिये वरना उसकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है।

और दूसरी यह कि किसी को कुछ भी सिखाते समय अपने बचाव का तरीका अपने पास जरूर रखना चाहिये ताकि अपनी सुरक्षा अपने आप की जा सके।

10 चीता और मेंढक[31]

यह लोक कथा भी एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश की है। तिब्बत देश भारत के उत्तर में स्थित है और चीन देश में आता है। यह संसार में सबसे ऊँची जगह है[32] – औसतन सोलह हजार फीट और दुनियाँ की छत कहलाती है।

यह तब की बात है जब दुनियाँ बनी ही बनी थी और सारे जानवर एक ही भाषा बोलते थे। एक दिन एक चीता अपना खाना ढूँढने के लिये बाहर निकला कि रास्ते में उसको एक बहुत बड़ा मेंढक दिखायी दे गया।

मेंढक ने भी चीते को देख लिया और वह जान गया कि वह भूखा था। इस समय उसके पास बचने के लिये कोई रास्ता नहीं था सो उसने अपने दिमाग से काम लेने का विचार किया।

जब चीता पास आ गया तो वह बोला — "हलो मिस्टर चीते, तुम कहाँ जा रहे हो?"

---

[31] The Tiger and the Frog – a folktale from Tibet, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=227
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[32] Tibet is situated on a high plateau in the North of India and is called "The Roof of the World".

चीता बोला — "मैं जंगल जा रहा था अपने लिये कुछ खाना ढूँढने के लिये। मुझे बहुत भूख लगी थी पर क्योंकि अब मुझे तुम मिल गये हो सो अब मैं तुम्हें ही खा लेता हूँ।"

मेंढक ने अपना शरीर फुलाया और बोला — "क्या तुमको मालूम है कि तुम मेरी जमीन पर शिकार कर रहे हो? मैं मेंढकों का राजा हूँ और चारों तरफ की यह सारी जमीन मेरी है। मैं बहुतों से बहुत दूर कूद सकता हूँ और मैं बड़े बड़े जानवर खाता हूँ।"

यह सुन कर चीता मेंढक पर हँस पड़ा।

हँसते हँसते जब वह रुका तो बोला — "तुम तो बहुत ही छोटे हो मेंढक राजा। तुम तो निश्चित रूप से मुझसे ज़्यादा दूर तक नहीं कूद सकते। इससे पहले कि मैं तुम्हें खाऊँ मेरा और तुम्हारी कूद का मुकाबला हो जाये।"

वहीं पास में एक नदी बह रही थी। चीता उस नदी की तरफ देखते हुए बोला — "इस नदी के उस पार से भी ज़्यादा दूर तक कूदने की कोशिश करो।" कह कर वह नदी के उस पार कूद गया।

पर चीते के कूदने से पहले ही मेंढक ने अपनी लम्बी जीभ से उसकी पूँछ पकड़ ली। जब चीता नदी के उस पार पहुँच गया तो पलट कर उसने नदी के पानी की तरफ देखा।

जैसे ही चीता पलटा तो मेंढक ने उसकी पूँछ छोड़ दी और वह चीता जहाँ उसको देखना चाह रहा था उस जगह से भी कहीं दूर कूद कर जा कर पड़ा।

वह वहीं से चिल्लाया — "मिस्टर चीते, तुम मुझे नदी में क्यों ढूँढ रहे हो? मैं तो यहाँ बैठा हूँ। मैं तुमसे कूद में आगे निकल गया। अब मुझे भूख लग आयी है अब मैं तुमको खाऊँगा।

पर इससे पहले कि मैं तुमको खाऊँ मैं अपने मुँह में से ज़रा चीते के बाल तो निकाल लूँ।" सो उसने अपने मुँह में से चीते की पूँछ के बाल थूकने शुरू कर दिये।

चीते को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेंढक के मुँह में चीते के बाल कहाँ से आ गये सो उसने मेंढक से पूछा — "पर तुम्हारे मुँह में ये चीते के बाल आये कहाँ से?"

मेंढक बोला — "ओह कल यहाँ एक चीता शिकार करने के लिये आया था। मैं उसके ऊपर कूदा और उसको खा लिया। वह था तो बहुत ही स्वादिष्ट पर उसके शरीर पर बाल बहुत थे। वे अभी तक मेरे मुँह में चिपके हुए हैं।"

अब चीते ने सोचना शुरू किया कि यह मेंढक देखने में तो कितना छोटा है पर लगता है कि बहुत ताकतवर है। यह तो मुझसे भी ज़्यादा दूर तक कूद गया और कल इसने एक चीता खा लिया। इससे पहले कि यह मुझे खा जाये मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये।

यह सोचते हुए चीता धीरे धीरे पीछे खिसकने लगा और फिर मौका देखते ही जंगल में दूर भाग गया।

जब वह भाग रहा था तो उसको एक लोमड़ा मिला। लोमड़े ने उससे पूछा — "क्या हुआ चीते भाई, तुम इतनी तेज़ तेज़ क्यों भागे जा रहे हो?"

चीता हॉफता सा बोला — "मैं अभी मेंढकों के राजा से मिला था। वह देखने में तो बहुत छोटा सा है पर है बहुत ही ताकतवर। वह मुझसे ज्यादा दूर तक कूद सकता है और कल तो उसने एक चीता ही खा लिया था।"

यह सुन कर लोमड़ा बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम जैसा बड़ा चीता उस छोटे से मेंढक से डर कर भाग सकता है। मैं तो तुमसे भी छोटा हूँ पर मैं उस मेंढक से ज़्यादा ताकतवर हॅू। आओ मेरे साथ और मुझे उसको खाते हुए देखो।"

चीता बोला — "मुझे मालूम है कि मेंढक क्या कर सकता है पर फिर भी अगर तुम यह सोचते हो कि तुम उससे ज्यादा ताकतवर हो तो चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।

पर मुझे डर है कि तुम भी उससे डर जाओगे और वहॉ से भाग जाओगे इसलिये हमको अपनी पूछें आपस में बॉध लेनी चाहिये।" सो दोनों ने अपनी अपनी पूॅछें आपस में गॉठ लगा कर बॉध लीं।

जब मेंढक ने दोनों को एक साथ आते हुए देखा तो बोला — "ओह मिस्टर लोमड़े, अच्छा हुआ तुम समय से मेरा खाना ले कर

आगये। मुझे तो डर था कि कहीं मुझे बजाय चीते जैसे बड़े जानवर के तुम जैसे छोटे जानवर को ही न खाना पड़ जाये।”

चीता यह सुन कर फिर डर गया। उसको लगा कि यह लोमड़ा चालाकी से उसको मेंढक के पास उसको खिलाने के लिये ले जा रहा है सो वह तुरन्त पलटा और लोमड़े को अपने पीछे घसीटता हुआ वहाँ से भाग लिया।

अगर वे दोनों मरे नहीं हैं तो वे अभी भी मेंढक से डर कर भाग रहे होंगे।

11 चिपमंक और भालू[33]

यह तब की बात है जब जानवर बोला करते थे। उस समय एक भालू इधर उधर घूम रहा था। ऐसा कहा जाता है कि भालू हमेशा अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं। क्योंकि वे बहुत बड़े होते हैं और ताकतवर होते हैं सचमुच में ही वे सब जानवरों में कुछ खास ही होते हैं।

सो यह भालू खाने की खोज में अपने पंजों से लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठों को लुढ़काता हुआ चला जा रहा था। इस भालू को अपने ऊपर बहुत भरोसा था सो चलते चलते वह बोला — "मैं जो चाहे कर सकता हूँ।"

तभी एक छोटी सी आवाज आयी — "ऐसा है क्या?"

भालू ने नीचे देखा तो वहाँ एक छोटा सा चिपमंक[34] एक गड्ढे में से झाँक रहा था।

भालू बोला — "हाँ यह ठीक है। मैं जो चाहे वह कर सकता हूँ।"

कह कर उसने अपना एक पंजा आगे बढ़ाया और उससे एक बड़ा सा लट्ठा लुढ़का दिया और बोला — "देखो यह मैंने कितनी

---

[33] Chipmunk and Bear – a folktale from Native Americans – Iroquois people.
Adapted from the Website :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/ChipmunkandBear-Iroquois.html

[34] Chipmunk is a squirrel-like animal with stripes mostly found in North America. See its picture above.

आसानी से कर दिया। मैं सबसे ज्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ। सारे जानवर मुझसे डरते हैं।"

चिपमंक ने पूछा — "क्या तुम सुबह को उगते हुए सूरज को भी उगने से रोक सकते हो?"

भालू ने कुछ पल सोचा और बोला — "मैंने कभी इस बात की कोशिश नहीं की पर मुझे यकीन है कि मैं उगते हुए सूरज को रोक सकता हूँ।"

चिपमंक ने पूछा — "क्या तुम यह बात यकीन के साथ कह सकते हो?"

"हाँ मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूँ। तुम देखना कल सूरज नहीं उगेगा। मैं भालू यह कहता हूँ।" और भालू यह कह कर पूर्व की तरफ मुँह कर के बैठ गया।

उसके पीछे पश्चिम में सूरज रात के लिये डूब गया पर भालू वही बैठा रहा। चिपमंक रात को आराम से सोने के लिये अपने बिल में चला गया। वह यह सोच सोच कर आनन्द ले रहा था कि भालू भी कितना बेवकूफ जानवर है। सारी रात भालू वहीं बैठा रहा।

सुबह हुई तो पहली चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया और पूर्व मे पहली रोशनी चमकी जो सूरज निकलने से पहले चमकती है।

भालू बोला — "आज सूरज नहीं उगेगा।"

उसने चमकती हुई रोशनी की तरफ देखा और फिर बोला — “आज सूरज नहीं उगेगा।”

खैर सूरज तो उगा जैसे रोज उगता है। यह देख कर भालू तो बहुत परेशान हुआ पर चिपमंक बहुत खुश हुआ। वह हॅसा और हॅसता ही रहा फिर बोला — “सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है।”

चिपमंक को इसमें इतना आनन्द आया कि वह अपने बिल में से बाहर निकल आया और चारों तरफ घूम घूम कर गोल गोल नाचने गाने लगा —

सूरज उग आया, सूरज उग आया
भालू बहुत दुखी है, पर सूरज तो उग ही आया

भालू तो वहॉ बहुत ही दुखी बैठा हुआ था जबकि चिपमंक खुशी से गाये जा रहा था, नाचे जा रहा था और इतना खुश था कि जमीन में लोट भी रहा था।

तभी भालू ने जितनी देर में मछली पानी में से निकलती है उस से भी जल्दी अपना पंजा उठाया और उसे जमीन में दे मारा। वह बोला — “शायद मैं सूरज को उगने से नहीं रोक सकता पर तुम अब दूसरा सूरज नहीं देखोगे।”

चिपमंक बोला — “ओह भालू नहीं। तुम सबसे ज्यादा ताकतवर हो। तुम सबसे ज्यादा तेज़ हो। तुम सब जानवरों में सबसे अच्छे हो। मैं तो बस तुमसे यों ही मजाक कर रहा था।”

पर भालू ने अपना पंजा वहाँ से नहीं हटाया।

चिपमंक फिर बोला — "ओ भालू, तुम अगर मुझे मार डालोगे तो ठीक करोगे। मुझको तो मरना ही चाहिये। पर मुझे खाने से पहले तुम मुझे एक बार, बस आखिरी बार भगवान की प्रार्थना तो कर लेने दो।"

भालू बोला — "करो करो, अपनी प्रार्थना जल्दी से करो। अब तुम्हारा आसमान में चलने का समय आ गया है।"

चिपमंक बोला — "ओ भालू, मैं मरना तो चाहता हूँ पर तुम मुझको इतना ज़्यादा दबा रहे हो कि मैं साँस भी नहीं ले पा रहा। मैं ठीक से बोल भी नहीं पा रहा।

अगर तुम अपना पंजा ज़रा सा ऊपर उठा लो तो मैं कम से कम साँस तो ले सकता हूँ और उस भगवान की प्रार्थना कर सकता हूँ जिसने बड़े अक्लमन्द और ताकतवर भालू को बनाया और चिपमंक जैसे बेवकूफ, कमजोर और छोटे से चिपमंक को बनाया।"

यह सुन कर भालू ने अपना पंजा उठा लिया। हालाँकि उसने अपना पंजा बहुत ज़रा सा ही उठाया था पर उतनी ज़रा सी जगह ही उस छोटे से चिपमंक के वहाँ से भाग जाने के लिये काफी थी।

वह तुरन्त ही अपने बिल की तरफ दौड़ गया। भालू ने अपना पंजा फिर से चिपमंक के ऊपर रखने को गिराया पर चिपमंक तो यह जा और वह जा।

भालू इतना तेज़ नहीं था कि वह उस भागते हुए चिपमंक को पकड़ सकता पर फिर भी उसके पंजों के नाखूनों की खराशें उसकी पीठ पर खिंच गयीं और तीन पीली धारियाँ छोड़ गयीं।

आज तक चिपमंक की पीठ पर वे धारियाँ हैं और वे उसको हमेशा याद दिलाती हैं कि किसी के साथ क्या होता है जब कोई छोटा किसी बड़े की हँसी उड़ाता है। लेकिन कम से कम उसकी जान तो बच गयी न।

12 शेर, खरगोश और हयीना[35]

एक बार की बात है कि सिम्बा[36] शेर अपनी गुफा में अकेला रहता था। जब वह जवान था तब तो उसे वहाँ अकेला रहना कुछ ज़्यादा बुरा नहीं लगता था पर इस कहानी से पहले उसकी टाँग में इतनी ज़ोर से चोट लग गयी कि वह अपने लिये खाना ही नहीं ला सका। तब उसको लगा कि एक ज़िन्दगी में एक साथी का होना कितना जरूरी होता है।

उसकी हालत तो बहुत ही खराब हो जाती अगर सूंगूरू बड़ा खरगोश[37] एक दिन उसकी गुफा में उससे मिलने नहीं आता।

जब सूंगूरू ने सिम्बा शेर की गुफा में झाँका तो उसको लगा कि शेर बहुत भूखा है। वह तुरन्त ही अपने बीमार दोस्त की देखभाल और उसके आराम का इन्तजाम करने के लिये दौड़ गया।

बड़े खरगोश की अच्छी देखभाल से सिम्बा शेर धीरे धीरे अच्छा हो गया और उसकी ताकत भी वापस आ गयी।

---

[35] The Lion, the Hare and the Hyena – a Hare and Hyena folktale from Kenya, East Africa. Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in E-book form free of charge.

[36] Simba is the name of the lion in Eastern side of Africa.

[37] Soongooroo hare – hare is the rabbit-like aimal but it is bigger than him in size. See its picture above. Soongooroo is his name.

सूँगूरू भी अब अपने दोनों के लिये छोटे छोटे शिकार पकड़ कर लाने लगा था और उन शिकारों की वजह से बहुत जल्दी ही शेर की गुफा के दरवाजे पर हड्डियों का ढेर भी जमा होने लगा।

एक दिन न्यान्गौ हयीना[38] अपने लिये खाना ढूँढ रहा था कि उसको हड्डियों की खुशबू आयी। वह खुशबू उसको सिम्बा शेर की गुफा तक ले आयी।

पर क्योंकि वे हड्डियाँ गुफा के अन्दर से भी देखी जा सकतीं थीं इसलिये वह उन हड्डियों को बिना शेर के देखे नहीं चुरा सकता था।

अपनी जाति के और हयीनाओं की तरह क्योंकि वह हयीना भी एक कायर था इसलिये उसने सोचा कि अगर उसको वह स्वादिष्ट खाना खाना है तो उसको सिम्बा से दोस्ती बनानी चाहिये। सो वह उस गुफा में अन्दर घुसा और खाँसा।

खाँसने की आवाज को देखने के लिये कि यह आवाज कहाँ से आयी सिम्बा शेर बोला — "कौन शाम को यह भयानक आवाज कर रहा है?"

[38] Nyangau Hyena – Hyena is a tiger-like animal. See its picture above, and Nyangau is his name in Southern Africa.

शेर की बोली सुन कर हयीना के पास जितनी हिम्मत थी वह भी जाती रही फिर भी वह बोला — “यह मैं हूँ तुम्हारा दोस्त न्यान्गौ हयीना।

मैं तुमसे यह कहने आया हूँ कि जंगल के जानवर तुमको बहुत याद कर रहे हैं। और हम सब तुम्हारे अच्छे हो कर अपने बीच में जल्दी आने की दुआ मना रहे हैं।”

शेर गुर्राया — “निकल जाओ यहाँ से। तुम झूठ बोल रहे हो क्योंकि अगर तुम मेरे दोस्त होते तो बजाय इन्तजार करने के मेरी तबियत का हाल बहुत पहले ही पूछते। वह सब तो तुमने किया नहीं और अब आये हो मुझे याद करने। चले जाओ यहाँ से।”

हयीना बेचारे ने अपनी पूँछ अपने पिछले पैरों के बीच में दबायी और भाग लिया वहाँ से। पीछे से वह बड़ा खरगोश खड़ा खड़ा हँस रहा था। हयीना वहाँ से चला तो गया पर वह उन हड्डियों के ढेर को नहीं भूल सका जो शेर की गुफा के दरवाजे पर पड़ा था।

हयीना ने सोचा — “मैं फिर वहाँ जाने की कोशिश करूँगा।” सो कुछ दिन बाद एक दिन जब बड़ा खरगोश शाम का खाना पकाने के लिये नदी पर पानी लेने गया था तब हयीना ने फिर एक बार शेर के घर आने की सोची।

वह जब शेर के घर आया तो शेर अपनी गुफा के दरवाजे पर ही सो रहा था। न्यान्गौ हयीना धीरे से बोला — “दोस्त, मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम्हारी टाँग का घाव बहुत ही धीरे धीरे भर रहा है

क्योंकि तुम्हारा दोस्त सूंगूरू खरगोश तुम्हारी देखभाल ठीक से नहीं कर पा रहा है।"

सिम्बा शेर गुर्राया — "क्या मतलब है तुम्हारा? मुझे तो सूंगूरू खरगोश का धन्यवाद देना चाहिये कि मुझे अपनी बीमारी के बुरे दिनों में उस बेचारे की वजह से भूखा नहीं मरना पड़ा। जबकि तुम और तुम्हारे कोई भी साथी मेरे पास तक नहीं आये।"

हयीना उसको विश्वास दिलाता हुआ बोला — "पर जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सच है। सारे जंगल में यह बात सभी जानते हैं कि सूंगूरू खरगोश तुम्हारा इलाज ठीक से नहीं कर रहा है ताकि तुम्हारा घाव देर से भरे।

क्योंकि जब तुम ठीक हो जाओगे तो वह तुम्हारे घर में जो नौकर की तरह काम कर रहा है वहॉ से निकाल दिया जायेगा। और यह नौकर की जगह उसके लिये बड़ी आरामदायक जगह है।

मैं तुमको पहले से बता रहा हूॅ कि सूंगूरू खरगोश यह सब तुम्हारे अच्छे के लिये नहीं कर रहा है।"

उसी समय सूंगूरू खरगोश नदी से घड़े[39] में पानी भर कर ले आया। उसने अपना घड़ा नीचे रखा और हयीना से बोला — "उस दिन की घटना के बाद तो मुझे तुमको यहॉ शाम

[39] Translated for the word "Gourd". Gourd is dried outer cover of a pumpkin like fruit. See its picture above

को देखने की बिल्कुल ही उम्मीद नहीं थी। इस समय तुमको क्या चाहिये?"

सिम्बा शेर बड़े खरगोश से बोला — "मैं तुम्हारे बारे में न्यान्गौ की कहानियाँ सुन रहा हूँ। वह कह रहा है कि तुम सारे जंगल में बहुत ही होशियार और चालाक डाक्टर हो।

उसने मुझसे यह भी कहा कि जो दवा तुम देते हो वे किसी और के पास नहीं हैं। पर साथ में वह यह भी कह रहा था कि तुम मेरा घाव और पहले ठीक कर सकते थे अगर यह तुम्हारी भलाई में होता तो। क्या यह सच है?"

सूंगूरू खरगोश ने एक पल के लिये सोचा कि यह सब क्या हो रहा है। वह जानता था कि उसको यह मामला बहुत ही सँभाल कर सुलझाना है क्योंकि उसको पक्का शक था कि यह न्यान्गौ हयीना उसके साथ कोई चाल खेलना चाहता है इसीलिये उसने यह सब सिम्बा शेर से कहा है।

सो उसने हिचकिचाते हुए शेर को जवाब दिया — "हाँ और ना। आप तो जानते हैं कि मैं एक बहुत छोटा सा जानवर हूँ और कभी कभी वे दवाएँ जिनकी मुझे जरूरत पड़ती है बहुत बड़ी होती हैं और मैं उनको नहीं ला सकता हूँ जैसा कि सिम्बा जी आपके साथ हुआ।"

अब शेर को यह जानने की इच्छा हुई कि उसके साथ क्या हुआ तो वह बैठा हो गया और सूँगूरू बड़े खरगोश से पूछा — "क्या मतलब? क्या हुआ मेरे साथ? मुझे साफ साफ बताओ।"

बड़ा खरगोश बोला — "अब यही ले लें। मुझे आपके घाव पर लगाने के लिये हयीना की पीठ की खाल के एक टुकड़े की जरूरत थी ताकि वह जल्दी से भर जाये पर मैं इतना छोटा सा जानवर, मैं भला उसकी खाल कैसे लाता।"

यह सुनते ही इससे पहले कि हयीना वहाँ से भागे शेर न्यान्गौ हयीना पर टूट पड़ा और उसकी पीठ से सिर से ले कर पूँछ तक एक लम्बी सी पट्टी फाड़ कर अपनी टाँग के घाव पर बाँध ली।

जैसे ही शेर ने हयीना की पीठ से वह पट्टी फाड़ी उसके शरीर के जो बाल खिंच गये थे वे सारे के सारे बाल खड़े ही रह गये। तब से आज तक न्यान्गौ और दूसरे हयीना के बाल लम्बे खुरदरे और खड़े हुए होते हैं।

इस घटना के बाद तो सूंगूरू बड़ा खरगोश डाक्टर की हैसियत से बहुत ही मशहूर हो गया क्योंकि हयीना की खाल की पट्टी बाँधने के बाद तो सिम्बा शेर की टाँग का घाव बहुत ही जल्दी भर गया था। पर न्यान्गौ हयीना अपना मुँह दूसरे जानवरों के बीच में बहुत दिनों तक नहीं दिखा सका।

List of Stories of “Intelligent Animals in Folktales”

1. A Dog and a Donley
2. The Spotted Dear and the Tiger
3. Donkey's Powers
4. Snail and Leopard
5. Dog and Lion
6. Monkey's Fiddle
7. Anansi and the Moss-covered Rock
8. The Mermot and the Raven
9. The Tiger's Teacher
10. The Tiger and the Frog
11. Chipmunk and Bear
12. The Lion the Hare and the Hyena

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022